।। गौ ।।

।। राष्ट्र माता ।।

चित्रमय चेतावनी

॥ आशीर्वचन ॥

गौ हिन्दू संस्कृति और इस सनातन राष्ट्र के मूलधारों में से एक है। गाय उसी प्रकार रक्षणीया है जिसप्रकार हम भूमि और राष्ट्र की रक्षा करते हैं, क्योंकि गाय की रक्षा का अर्थ है अन्तर्बाह्य शुचिता, शक्ती और मनुस्वभाव की रक्षा। वस्तुतः हमारा जीवन और परम्परायें गाय से गुथी हुई है। इसीलिये भगवानने स्वयं अपने अवतार कार्यों में गो रक्षा की उद्घोषणा की। किन्तु दुर्भाग्य से यह समाज धीरे धीरे गो माता के महत्व और कृतज्ञता को विस्मृत करता गया और इसी के साथ स्वातंत्र्य काल में कसाईयों के हाथो गोवध का पापाचार होता रहा। अब तो देश में यांत्रिकी कत्ल खाने लगाकर मांस भक्षियों की क्षुधापूर्ति के लिये गो मांस संसार भर में भेजा जा रहा है, इसके कारण भारत गोवंश से विहीन होने की स्थिति की ओर बढ़ रहा है।

यद्यपि गो माता की रक्षा के लिये हमारे पूज्य संतो, एवं गोभक्तोंने निरंतर संघर्ष जारी रखा, परंन्तु गो भक्तों के एक संगठित और प्रचण्ड आंदोलन के बिना यह संभव नही। इसके लिये आवश्यक है कि हमारा समाज गाय के साथ हमारे भावनात्मक सम्बधों को समझे गोवंश और गोबर में लक्ष्मी का वास है इन तथ्यों को पहिचाने तो निश्चित ही एक जीर्ण क्षीर्ण लड़खड़ाते राष्ट्र की जगह हम एक समर्थ और शक्तिशाली भारत के निर्माण की ओर, जहां गोरस की सरितायें फिर बहें अग्रसर हो सकते हैं। समाज के लोक शिक्षण और लोक जागरण की दृष्टि से इस पुस्तिका में चित्रों व सत्य भाषा के माध्यम से वैज्ञानिक तथ्यो से भी गोवंश का महत्व बताने का स्तुत्य प्रयास किया गया है।

– अशोक सिंघल
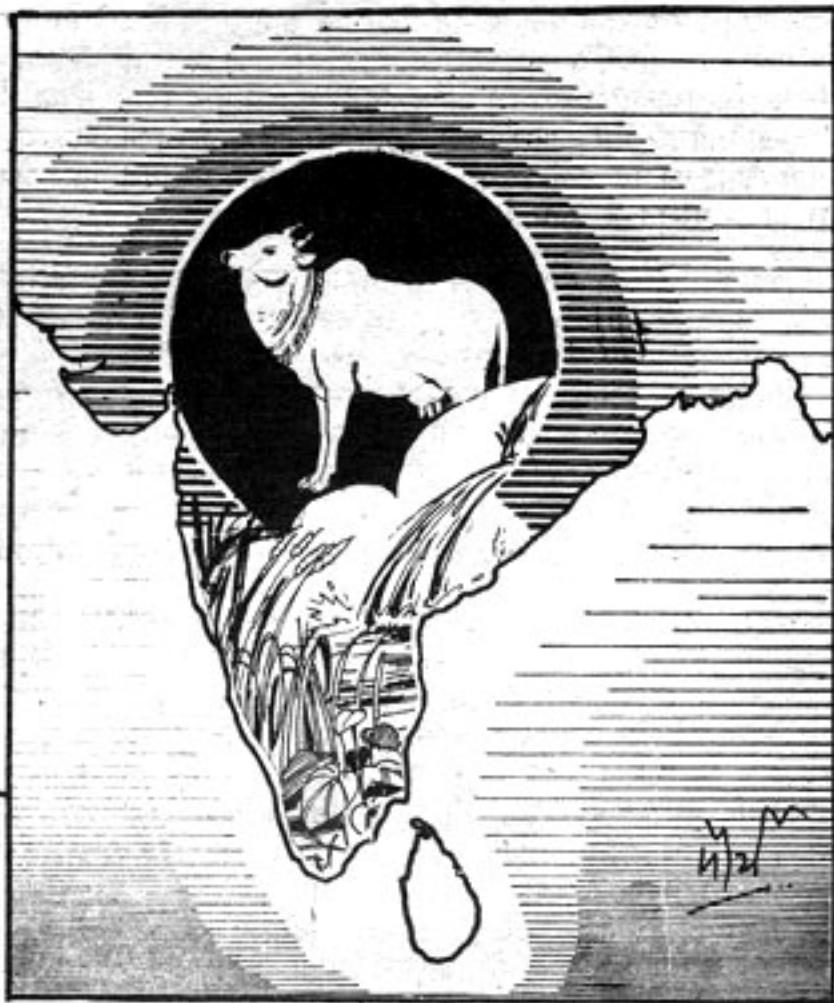
॥ ऋषि और कृषि प्रधान भारत ॥

प्रकृति रूपा गाय और धर्म सदृश बैल ये दोनो ही
भारत के दिव्य भव्य रूप की आधार शिला हैं।
गौ धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चारों की दाता है।
इसी लिये गौमाता को "कामधेनु" भी कहा गया है।

सर्वदेव मयी गौमाता
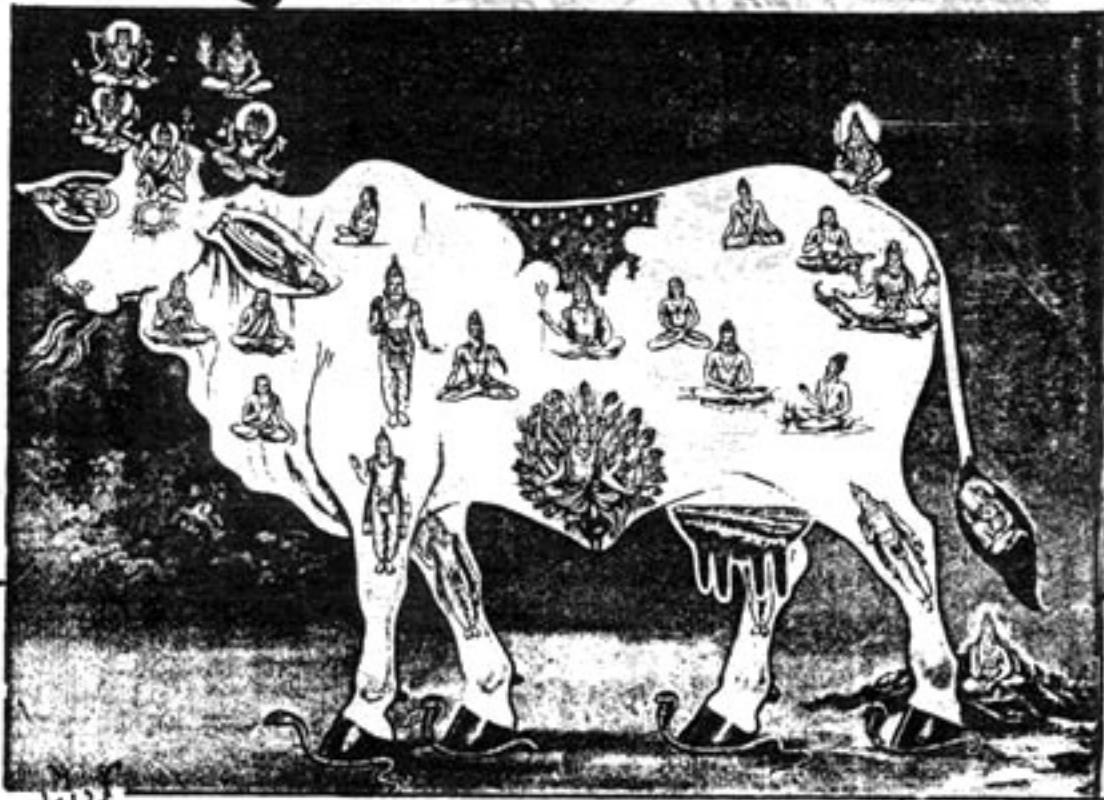
भारत की शास्त्रीय एवं लोक मान्यता है कि गाय के रोम-रोम में असंख्य देवताओं का वास है। अतः गौ सेवा-पूजा से अनेक देवताओं की पूजा का फल या कष्ट देने पर पाप मिलता है।

गौमय भारत

"गौ" शब्द भारत में पवित्रता, महानता श्रद्धा और संस्कृति का प्रतीक है। इसीलिये भारत के अनेक पावन संबोधन गौ से ही प्रारंभ होते हैं।

संसार के समस्त जीवों में सिर्फ गाय ही ऐसी प्राणी है जिसका बच्चा पैदा होते ही "माँ" शब्द का उच्चारण करता है। सारे संसार को

माँ की ममतामयी गरिमा एवं लौकिक-पारलौकिक हर दृष्टि से परम लाभकारी होने के कारण ही गाय को पशु नहीं वरन घर परिवार के सम्मानित सदस्य के रूप में प्रतिष्ठा दी जाती है।

सभी पंथों के धर्मग्रंथ गौ महिमा के आख्यानों से भरे हुऐ हैं। हिन्दू ग्रंथ ही नहीं मुस्लिम और ईसाई ग्रंथों में भी "गौमहिमा" पर भली-भाँति प्रकाश डाला गया है। गोरक्षा का आदेश दिया है।

संतों की वाणी
गौ कल्याणी
भारत के भिन्न-भिन्न पंथों
व संतों में ईश्वर विषयक
विचारों में मतभिन्नता
अवश्य रही, परन्तु...
सभी ने एक स्वर से
गाय की महिमा गाई। उसे पूज्य और अवध्य बताया।

विप्र धेनु सुर संत हित .... लीन्ह मनुज अवतार।

राक्षसी आतंक व अत्याचार से त्रस्त
गौ माता की करुण- कातर पुकार से
द्रवित होकर परमपिता स्वयं अवतार लेकर पृथ्वी को
भार मुक्त करते हैं। .... गौ हत्यारे राक्षस हैं ...प्रभु द्वारा
उनका सर्वनाश निश्चित है।"

— ब्रह्मलीन ब्रह्मर्षि देवरहा बाबा

"देश का नौजवान गौमाता की पुकार सुनकर सड़कों पर
उतर आयेगा और देश की धरती से गौहत्या का कलंक
अपने रक्त से धो देगा"... (बाबा की घोषणा सत्य होती जा रही है)

राम राज्य की नींव गौसेवा

आदर्श रामराज्य की परिकल्पना को साकार करने के लिये महर्षि वशिष्ठ ने राजा दिलीप को गोसेवा का निर्देश दिया। 'नन्दिनी' गाय की सेवा एवं रक्षा के लिये अपने जीवन को दाँव पर लगाने का आदर्श उपस्थित करके राजा दिलीप ने अपने कुल में "रामावतार" का सौभाग्य पाया.
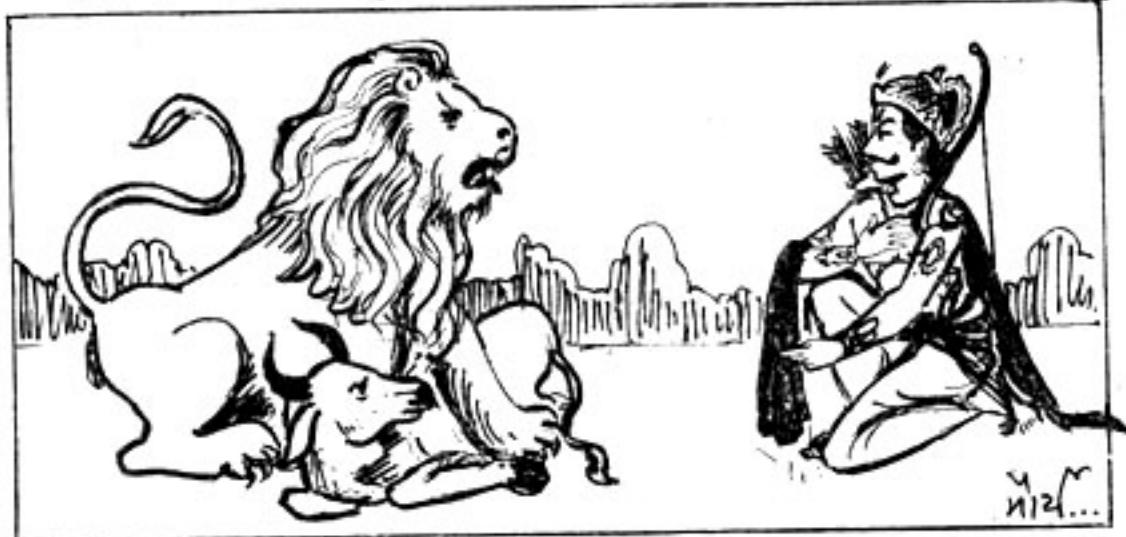
महाराजा दिलीप की भाँति ही महाराजा भृतंभर की गोसेवा'की कथा भी शास्त्रों में वर्णित है। सत्यकाम जाबाल को गोसेवा से ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति, महर्षि च्यवन द्वारा अतुल सम्पदा - राज्य आदि ठुकराकर अपने मूल्य के रूप में एक गाय स्वीकारना आदि उदाहरणों से जहाँ गोसेवा की प्राचीन परिपाटी का ज्ञान होता है वहीं यह भी सिद्ध होता है कि लौकिक, पारलौकिक हर दृष्टि से गोसेवा अमोघ फलदायी है।

गोपाल ..... गोघातकों के लिये काल !

भगवान श्री कृष्ण ने कंस द्वारा संचालित अनेक गोघाती कत्लखानों को ध्वस्त किया। कालिया, बकासुर, अघासुर आदि के वध की कथाओं में उसी का रोचकवर्णन है।

गोरक्षा के लिये शस्त्र उठाना श्री कृष्ण की भक्ति ही है.

१८५७ की क्रांति के मूल में भी गौहत्या का विरोध ही था। कारतूस में गाय की चर्बी लगाने के विरोध में क्रांतिकारी शहीद मंगल पाण्डे ने सशस्त्र विद्रोह करके गौहत्यारे अंग्रेजों को मौत के घाट उतार कर स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल बजा दिया था।

आज पुनः देश पर गोरे अंग्रेजों से अधिक घातक काले अंग्रेजों का शासन है। जो गो हत्या की वकालात कर रहे है। गो हत्यारो को संरक्षण दे रहे है। देश की सांस्कृतिक स्वतंत्रता के लिये इन्हें उखाड़ फेंकना ही राष्ट्रधर्म है - बाबा

गौहत्यारा वध योग्य

मेरे जीते जी यह गाय नहीं कट सकती – डा हेडगेवार (पुसद में)

स्वतंत्रता संग्राम में लगे नेताओं की स्पष्ट घोषणा थी कि....

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद में सम्पूर्ण देश में पूरी तरह से

गौहत्या बंद कर दी जायेगी !

आजाद भारत की सत्ता एक गौविरोधी व्यक्ति के हाथों में सौंपने की एक भारी भूल ने बापू के सारे अरमानों पर पानी फेर दिया। हिन्दी की घोर उपेक्षा, स्वदेशी अर्थतंत्र का नाश और चल रही गौहत्या उसी भूल का परिणाम है!

परकीय आक्रान्ता मुगल शासकों ने भौतिक रूप से हमारा नुकसान अवश्य किया। परन्तु अंग्रेजी मानसिकता के गुलाम हमारे अपने ही शासकों ने तो भारतीय संस्कृति - सभ्यता को जड़ से ही खोद डालने का क्रूर कुकृत्य प्रारंभ किया, जो आज भी जारी है।

मूर्ख, पोंगा पण्डित, जानवर को माँ कहते हो, अरे खाना है तो इसका मांस खाओ! दूध में क्या रखा है?

कारतूस में गाय की जरा सी चर्बी लगाने पर जिन भारतीयों ने गोरे अंग्रेजों शासन को उखाड़ फेंका वर्तमान में चर्बी युक्त घी और

गौमाँस से बने पेप्सी खाद्य प्रेम से खा रहे हैं।

जनसत्ता (पेप्सी सॉस में गोमांस) दैनिक भास्कर (चिकलेट में गौमांस)

- त्यागपत्र दे दूंगा पर गौहत्या बंदी के आगे नहीं झुकूँगा।
- राज्य सरकारें ना गौवध निषेध कानून बनायें.. ना पास होने दें।
- भोजन में गौमाँस का प्रयोग बढ़ाया जाये। दवाइयाँ भी बनाये।
- दिल्ली और मुंबई में बड़े-बड़े कत्लखाने खोले जायें।

तब से लेकर आज तक गाँधी जी के इन्ही बगुलाभगतों (कांग्रेस) की छत्र-छाया में गौमाता के रक्तमाँस का राष्ट्रघाती व्यापार वैध एवं अवैध रूप से लगातार जारी है।

संदर्भ - गौमाता का विनाश - सर्वनाश - श्री रामशंकर अग्निहोत्री (लेखक)

* इस्लाम में गाय की कुर्बानी देने का कोई प्रावधान नहीं है। न्यायालय ने भी निर्देश दिया है। फिर भी हिन्दुओं को को चिढ़ाने के लिये......

आजादी के पूर्व देश में 300 कत्लखाने थे।

मांस निर्यात बिल्कुल नहीं।

आजाद भारत में कत्लखानों की संख्या 36,031 है।*

मांस निर्यात बड़े पैमाने पर।

प्रतिदिन (दि टाइम्स ऑफ इन्डिया नई दिल्ली 4 अप्रेल 1994)

3,50,000
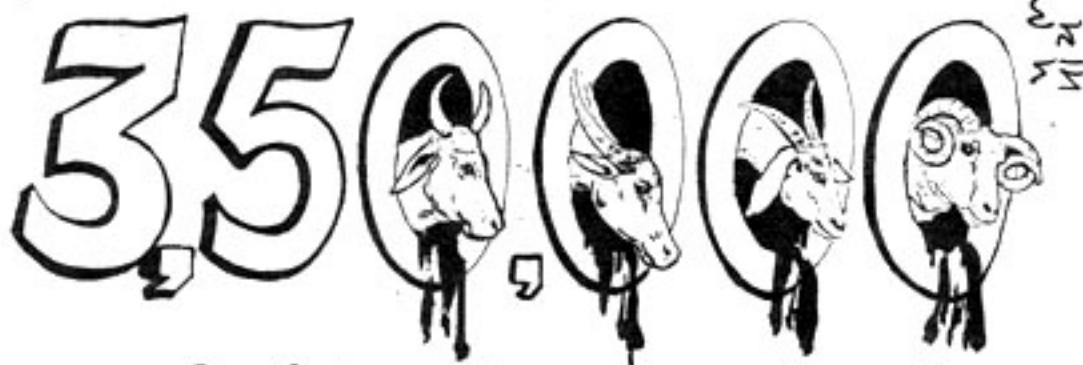
पशु निर्ममता पूर्वक कत्ल किये जाते हैं।

इस भारी संख्या में संसदीय आंकड़ों के अनुसार प्रतिदिन **29,500** गौवंश का वध शामिल है। इस वैध कत्ल के अतिरिक्त हजारों की संख्या में गौवंश हत्या और तस्करी का सिलसिला जारी है।

* संदर्भ- मेट्रोपोलिस मुंबई 23-24 सितंबर 1993 एवं कत्लखाने के 100 लक्ष्य से.
* विनियोग परिवार मुंबई के अनुसार पंजीकृत यांत्रिक व सामान्य कत्लखाने 3651 .

"हिंसा और क्रूरता पर आधारित अर्थतंत्र के लिये मेरी राजनीति में कोई स्थान नही हैं" कहने वाले महात्मा गांधी के देश में आज सरकार जीव हत्या को उत्पादन और खेती का नाम देकर विदेशी मुद्रा कमाने के मोह में पड़ी हुई है।

* हालैंड से एक करोड़ टन रासायनिक खाद्य पर पले सुवरों का मैला आयात

खूनी व्यापार

ने जगद्गुरु भारत को क्रूर कसाई बना दिया.

माँय...
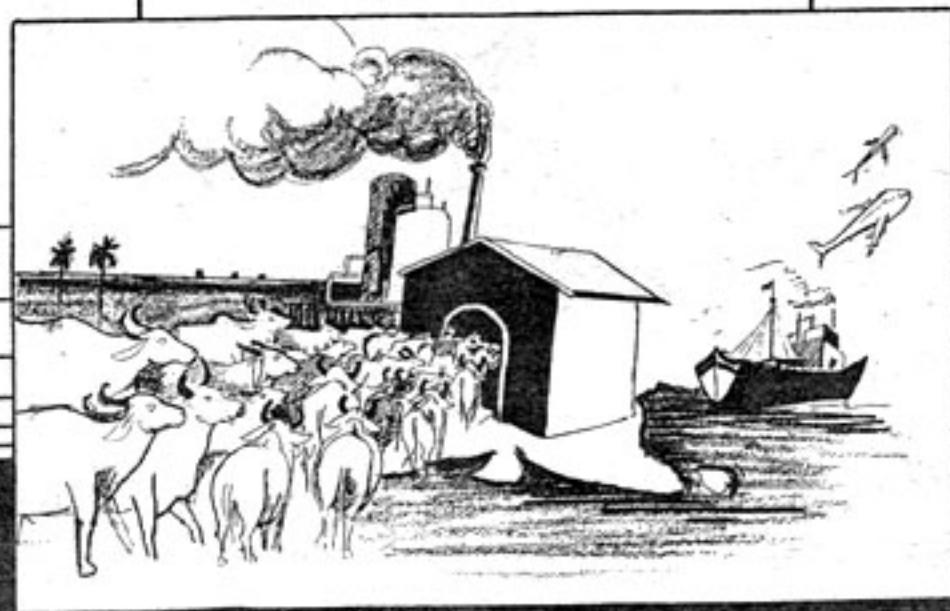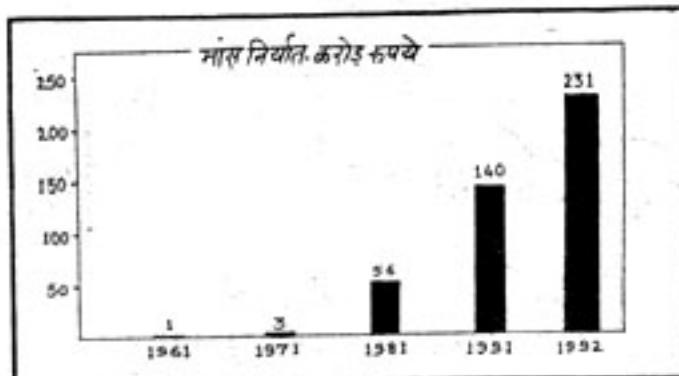
मध्य पूर्व के देशों को भेजे जाने वाले मॉंस में 70 प्रतिशत मॉंस भारतीय पशुओं का होता है। सबसे बड़ा कसाई देश

संदर्भ - इकोनामिक सर्वे 1992-93 पेज 5.91 द्वारा "एन अलार्म काल"

संविधान में निरुपयोगी गौवंश को काटने की छूट है। इसी का सहारा लेने के लिये स्वस्थ बैल आदि पशुओं को क्रूरतम हथकंडों द्वारा अपंग बनाकर खुले आम काट दिया जाता है.

कत्लखानों में पशुओं के स्वास्थ्य निरीक्षण के लिये एक शासकीय पशु चिकित्सक नियुक्त रहता जो जांच करके उसके निरुपयोगी होने का प्रमाण पत्र देता है। आम तौर पर उसे थोड़ी सी रकम देकर पटा लिया जाता है। यदि डॉक्टर ऐसा करने से मना करता है तो उसे मारा पीटा भी जाता है। ईदगाह* कत्लखाने में डॉक्टर पर प्राणघातक हमला इसीका उदाहरण है।

संदर्भ - ईदगाह प्रकरण के समय समाचार पत्रों की खबर के अनुसार

भूख से व्याकुल मृतप्राय पड़े पशुओं को घसीट यंत्र के पास लाकर पीट-पीटकर खड़ा किया जाता है एवं उसका एक पैर पुली से जकड़ा जाता है।
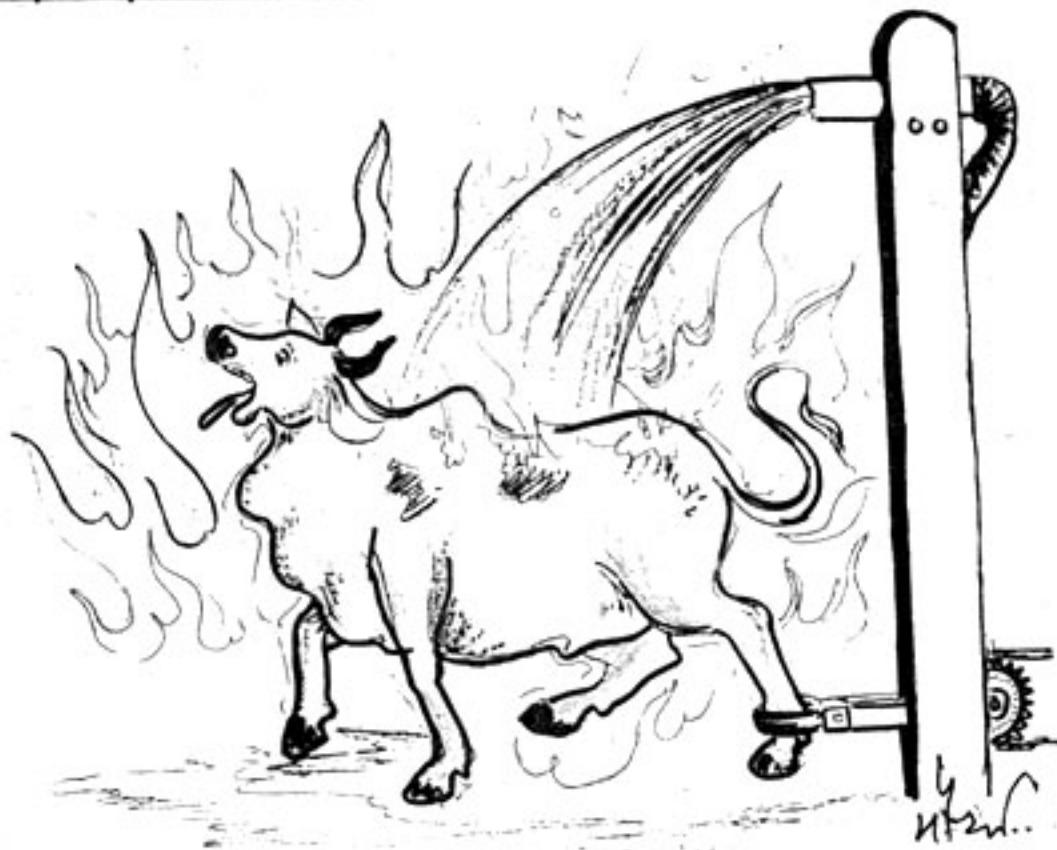
इसके बाद में उस पर उबलता हुआ पानी छोड़ा जाता है ताकि खून का पूरे शरीर में तेजी से संचार हो एवं पशु का चर्म भी नर्म हो जाये।

भारतीय चमड़ा अनुसंधान के अनुसार 1987 में 1 करोड़ 90 लाख गौवध

....इसके बाद पुली ऊपर उठने लगती है और पशु एक पैर पर लटका दिया जाता है। कसाई उल्टे लटके पशु की गलनस (जेगुलर-वीन) काट देता है ताकि पशु मरे नहीं.. और उसका खून रिस-रिस कर निकल आये !
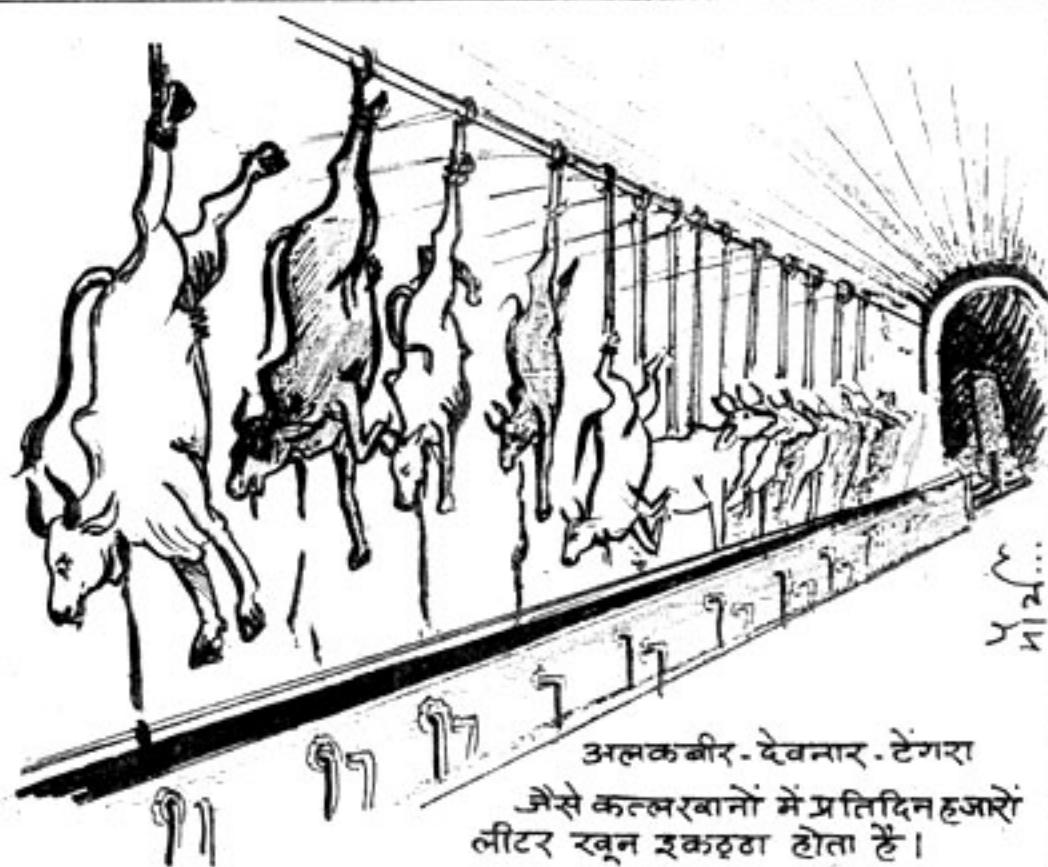
यह खून सुविधा होने पर दवाई-टॉनिक आदि में काम लिया जाता है। या बहा दिया जाता है। भूजल को प्रदूषित करने वाला यह खून कई बार फूटी पाइपलाइनों द्वारा नलों में आ जाता है। दिल्ली में ऐसा हुआ भी।

* समाचार पत्र * कत्लखानों के पास के निवासियों की सत्य शिकायत

गौवंश का कत्ल देश के अर्थतंत्र का कत्ल है।

भारत में गाय अपनी उपयोगिताओं के कारण आर्थिक इकाई के रुप में जानी जाती रही है। इसीलिये किसी भी व्यक्ति की समृद्धि उसके सोने-चाँदी, भवन, जमीन आदि के बजाय उसके पास उपलब्ध गोवंश की संख्या से आँकी जाती थी। गौवंश को गोधन कहा जाता है। ऐसा चेतन धन जो लगातार गुणात्मक रूप से बढ़ता जाता है।

थोड़ी सी विदेशी मुद्रा के लोभ में इसे नष्ट करने का फल हुआ कि "सोने की चिड़िया" कहलाने वाला समृद्ध भारत आजकल विश्व के सर्वाधिक कर्जदार देशों में प्रमुख स्थान पर है। जैसे-जैसे गोवंश कटता गया भारत की गरीबी, मँहगाई और कर्ज बढ़ता गया।

पशु की जान निकलने के पूर्व ही उसके पेट में छेद करके हवा भरी जाती है... और चमड़ा उधेड़ लिया जाता है!

इस घोर पाप के जिम्मेदार मांस व चमड़ा निर्यात करने वाली सरकार के साथ ही वे लोग भी हैं जो चमड़े का उपभोग बड़ी मात्रा में कर रहे हैं। नर्म चमड़े के शौकीन हैं।

स्वयं संसदीय समिति ने (१९९३) अपनी सिफारिश (पैरा २.२७) में इस पर आपत्ति की है।

कॉफ लेदर (नर्मचमड़ा) मुलायम मांस और रेनेट चीज (बछड़े की आंत का पावडर) के लिये पैदा होने से पूर्व ही लाखों बछड़े मार दिये जाते हैं।

संदर्भ इकोनामिक सर्वे 1992-93 पेज क्र. S-91
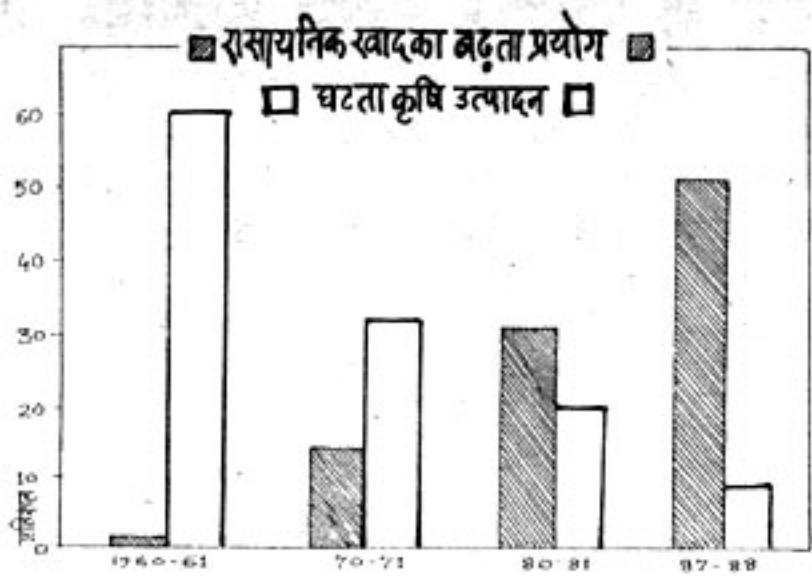
रासायनिक खाद नशीली दवा के समान है। जिसके प्रयोग से प्रारंभ में तो अप्रत्याशित लाभ होता है। परन्तु धीरे-धीरे यूरिया की मात्रा बढ़ती जाती है और उत्पादन लगातार घटता जाता है। अंत में रह जाती है बंजर - ऊसर भूमि ! अकाल की छाया !!

अपने अनाज और रासायनिक खाद का बाजार बनाने के लिये भारत में कत्लखानों की बाढ़ एवं मांस भक्षण की घृणित परम्परा को बढ़ाया जा रहा है। विदेशों की इस क्रूर चाल में फंसकर हम स्वयं अपने जैविक खाद के भंडार पशुओं को काटे जा रहे हैं।

संदर्भ - (इंडिया 1990)

गोहत्या देश का एक धार्मिक प्रश्न है तो गौवंश हत्या भी उतना ही धार्मिक एवं आर्थिक प्रश्न है। इसके अलावा यह भी विवादित किन्तु मानवीय प्रश्न है कि पशु को "कत्ल" के नाम पर मर्मान्तक पीड़ा देते हुए तड़पा-तड़पा कर क्यों मारा जाता है। धर्म के नाम पर इक्का-दुक्का बलि पर तूफान उठाने वाले कथित समाज सुधारक मुसलमानों द्वारा कत्ल पर....?

कसाई के इस क्रूर कृत्य को 'कृषि' का नाम देकर सरकार यज्ञ रूपी 'कृषि' और ऋषि रूपी 'कृषक' को भी अपमानित कर रही है!

कृषि

मांस प्राप्ति के संसाधनों को सरकार ने कृषि सूची Agriculture index में रखा है। कत्ल के इस कुकर्म को सांपों की खेती, खरगोश की खेती, चूजों की खेती, सुअरों की खेती, मछलियों की खेती, अंडो की खेती आदि का नाम दिया गया है। क्या ये खेत में उगते हैं? पेड़ों पर फलते हैं? अंडे को शाकाहारी कहकर प्रचारित करना इसी नीति का अंग है.

सिंगापुर एशियन मॉस कम्युनिकेशन रिसर्च इंफर्मेशन सेन्टर के अनुसार भारत की 74% हिंसा का उत्तरदायी दूरदर्शन है। विज्ञापन तथा मांस पकाने की विधियाँ हिंसा की मनोवृत्ति भड़का रही है।

॥ ऊर्जा एवं खाद ॥

सरकार एनरान - निप्पान जैसी विदेशी कम्पनियों को बिजली बनाने के लिये बुला रही है। रासायनिक खाद के आयात और सबसिडी में अरबों-खरबों रूपये लुटा रही है परन्तु इन सबके देसी स्त्रोत पशु और पशु उत्पाद की पूर्ण उपेक्षा की जा रही है।

केलीफोर्निया में 90 हजार बूढ़ी-अपंग और बाँझ गायों के गोबर से चलने वाली पावर जनरेटिंग इकाई स्थापित की गई है। इस परियोजना 15 मेगावाट विद्युत के अतिरिक्त 160 टन राख खाद एवं 600 गैलन गोमूत्र कीटनाशक के रूप में प्राप्त हो रहा है। 45 मिलियन डालर से स्थापित इस परियोजना से प्रतिवर्ष 2 मिलियन के खर्च पर 10 मिलियन डालर की प्राप्ति हो रही है।

भारत में भी "नेडप" पद्धति के अनुसार एक गोवंश के वार्षिक गोबर से बनाई गई खाद का मूल्य 30 हजार रूपये से भी अधिक होता है। एवं गुणवत्ता भी कहीं अधिक होती है। बायोगैस संयत्रों द्वारा गांवों की विद्युत आपूर्ति गांवो से ही हो सकती है।

....गोवंश कभी भी निरूपयोगी नहीं.

संदर्भ गाय का चिरकालिक सच्चा अर्थशास्त्र - वर्धा - पेज नं. 38

....या तो राष्ट्रीय चिन्ह बदल दो.

या यांत्रिक कत्लखानों और मांस निर्यात को रोको.
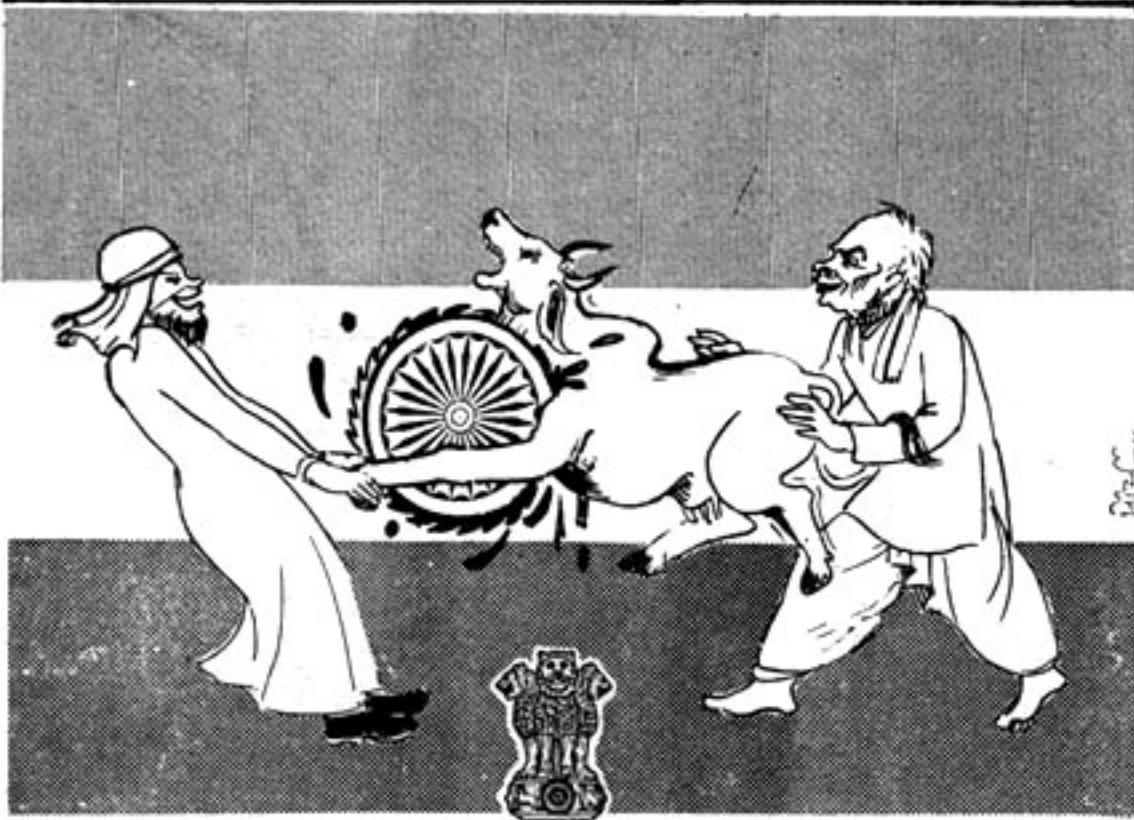
भारत का राष्ट्रीय चिन्ह तीन मुंह वाली सिंह मूर्ति है जिसके नीचे एक ओर घोड़ा और दूसरी ओर बैल अंकित है। तिरंगे ध्वज के बीच का चिन्ह "अशोक चक्र" भी अहिंसा का प्रतीक है। कोई इनका अपमान करे तो उसे दंडित किया जाता है।

परन्तु स्वयं भारत की सरकार ही अपनी क्रूर नीति से इनका अपमान करके राष्ट्र घात कर रही है.

सरकार ने देश में बड़े - बड़े यांत्रिक कत्लखानों को हरी झंडी दिखा दी है !

पश्चिमी देशों की कूटनीति और कांग्रेसी नेताओं के स्वार्थ ने भारत की

...परम्परागत कृषि को भारी लागत वाला उद्योग बना दिया.

भारतीय कृषि बिना पूंजी वाला ऐसा धंधा था जो यज्ञ के समान पावन माना जाता था। कृषक को अन्नदाता का संबोधन दिया जाता था। थोड़े बहुत लगान आदि के अतिरिक्त सारी लागत पूंजी सिर्फ मानवीय श्रम ही था। खाद गौवंश आदि पशुओं से गोबर के रूप में, मूत्र कीटनाशक के रूप में एवं शक्ति सिंचाई - हल चालन आदि रूप में मुफ्त मिल जाती थी. कृषि-उत्पाद की ढुलाई एवं परिवहन भी बैलगाड़ियों से बिना खर्च होता था।

अंग्रेजों ने भारत में आने के बाद इसका अध्ययन किया... और अपने रासायनिक खाद और कीटनाशकों की खपत हो सके, इस लिये भारतीय कृषि की मूलाधार गाय को गौमाता के स्थान से हटाकर एक अपयोगी पशु घोषित किया...प्रचारित किया, ताकि हमारी धार्मिक आस्था खत्म हो जाये। परन्तु अंग्रेजों के जाने के बाद अंग्रेजी संस्कारों में डूबे हमारे शासकों ने गाय को उपयोगी मानने से इंकार कर दिया। और निरुपयोगी कहकर गौवंश की हत्या करने के लिये बड़े - बड़े यांत्रिक कत्लखाने खोल लिये। नेहरु से राव तक यही अंग्रेजीपन छाया रहा।

इस कारण किसानों को मिलने वाली मुफ्त की खाद - दवा व शक्ति समाप्त हो गई. और मंहगे यूरिया, कीट नाशकों व डीजल ने मंहगाई तो बढ़ाई ही साथ में भारतीय कृषि को विदेशी संसाधनों की दया पर चलने वाला मंहगा उद्योग बना दिया.

राष्ट्रघाती जहर

"यांत्रिक कत्लखाने"

भारत के प्राकृतिक खाद भंडार

को नष्ट करने का सोचा-समझा विदेशी षडयंत्र है.

WHEN DEATH BECKONS: Animals lined up for the chopping block at the Deonar abattoir in Bombay – Express file photo

विदेशी रासायनिक खाद लॉबी द्वारा इसीलिये अप्रत्यक्ष रूप से बड़े पैमाने पर कत्लखानो को प्रोत्साहन दिया जा रहा हैं। अमरीकन बैल आयोग ने भारत की 80% गायों के कत्ल का सुझाव दिया है। (गाय का [illegible])
पृष्ठ क्र.- 10
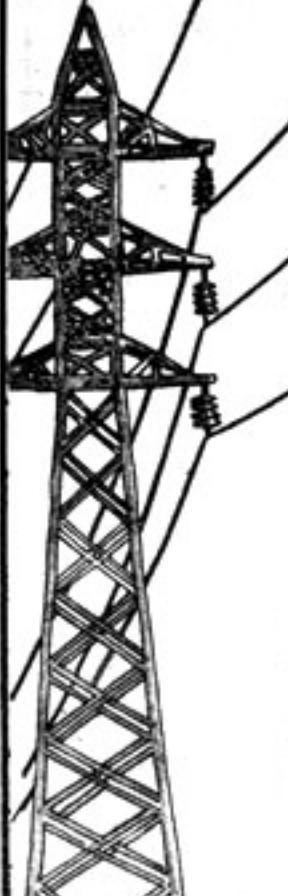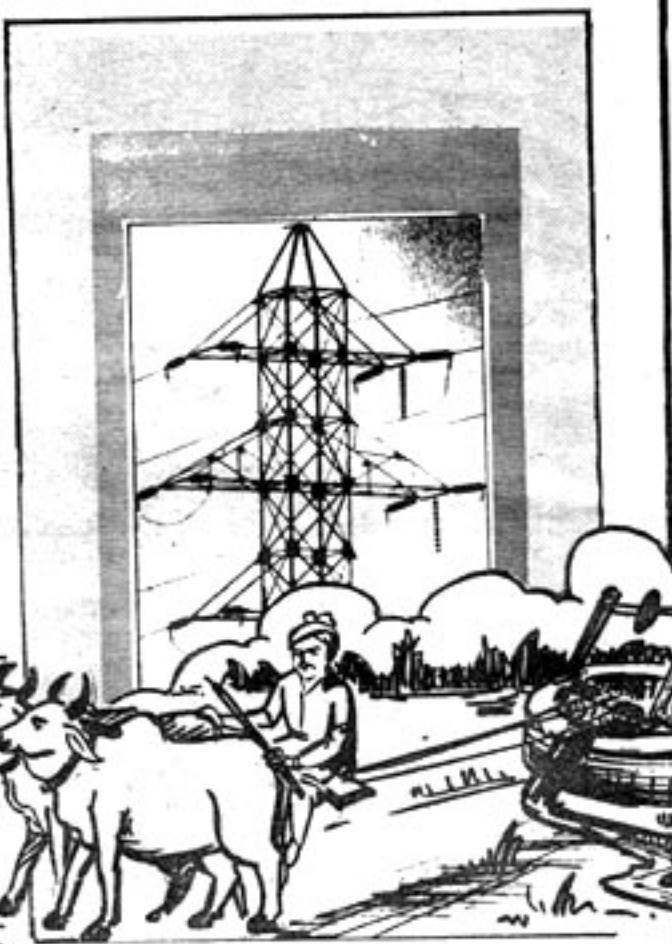
अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा सम्मेलन में श्रीमती इंदिरा गाँधी का वक्तव्य (नेरोबी)

ट्रेक्टर या गौवंश
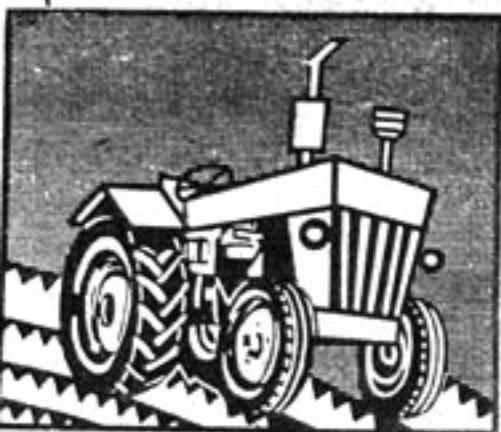
वर्तमान में देश के कृषि कार्य में ८ करोड़ बैल प्रयुक्त हैं। यदि ये नहीं होंगे तो हमें इनके बदले में २ करोड़ ट्रेक्टर्स की आवश्यकता होगी जिनकी लागत होगी ५० खरब रुपये। और उन्हें चलाने के लिये डीजल हेतु ६५० अरब रु. अलग से!

⊙ ट्रेक्टर महँगा • प्रदूषणकारी • निरंतर घिसते हुऐ नष्ट • भूमि को हानि केंचुए आदि कृषि हितकारकों का नाशक • भारत के छोटे-छोटे खेतों एवं प्राकृतिक भू रचना के अनुकूल नहीं • विदेशी निर्भरता •

⊙ गौवंश • सस्ता • प्रदूषण रहित • लगातार वृद्धि • मरने के बाद भी उपयोगी • शक्तिहीन होने पर भी गोबर-मूत्र द्वारा प्राकृतिक खाद • • छोटे बड़े सभी खेतों एवं देशी भूसंरचना के अनुकूल • भूमि को लाभ •

भारत में ट्रेक्टर द्वारा खेती 10% बैलों द्वारा खेती ९०%
ट्रेक्टर जितनी खेती तो भारत में भैंस-पाड़े से ही हो जाती है।

संदर्भ- इंस्टीट्यूट ऑफ इकोनामिक्स ग्रोथ दिल्ली द्वारा विशेष अध्ययन
(कल्याण)

1988 में भारत में 264 मिलियन घन मीटर लकड़ी थी जिसमें से 250 मिलियन क्यूबिक मीटर लकड़ी सिर्फ जलाने में प्रयोग की गई. यदि गोबर ना मिलेतो ईंधन हेतु 6.80 करोड़ टन लकड़ी जलाई जायेगी.
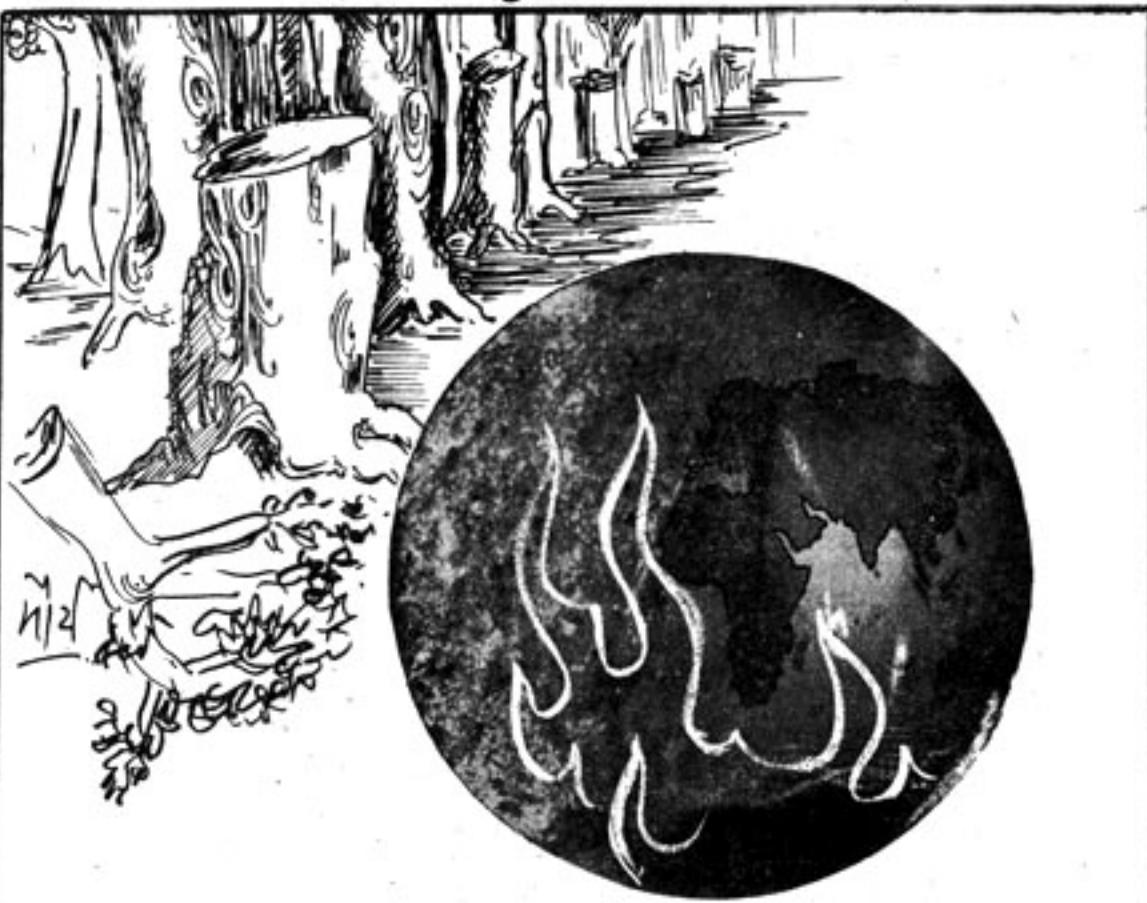
देश की एक बड़ी आबादी ईंधन हेतु गोबर के कंडों को जलाती है। गौवंश की कमी के साथ ही साथ इस हेतु लकड़ी का प्रयोग बढ़ रहा है। फलतः वृक्षों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है। ..... जंगल नष्ट हो रहे हैं .... अनियमित वर्षा .... भीषण गर्मी और प्राकृतिक असंतुलन ----- अंत में सर्वनाश !!!

सामना में श्रीमती मेनका गांधी एवं कल्याण में श्री पुरुषोत्तमदास झुनझुनवाला.

भारत एक विशाल देश है जो 5,66,878 गाँवों (82 प्रतिशत आबादी) में बसा हुआ है। इतने विशाल भूभाग में 6800 रेलवे स्टेशन, 58,300 कि.मी. रेलवे लाइन, 23818 कि.मी. राष्ट्रीय राजमार्ग एवं 2,83,640 कि.मी. सड़क मार्ग हैं। जो इस विशाल क्षेत्रफल को देखते हुऐ बहुत ही कम है। हमारे अधिकांश गाँव आज भी इनसे जुड़े हुऐ नहीं हैं।

देश के कृषि तथा उद्योगों के लगभग 1 हजार मिलियन टन उत्पादन को खेतों से फैक्ट्रियों तथा फैक्ट्री से उपभोक्ता केन्द्रों तक ले जाना पड़ता है। रेलवे की 3,58,000 वेगनों के माध्यम से 180 मिलियन टन एवं 2,20,000 ट्रकों के द्वारा 120 मिलियन टन माल की ढुलाई होती है (कुल 30%)

शेष 700 मिलियन टन माल यानि **70%** ढुलाई अब भी 1.21 मिलियन बैलगाड़ियों द्वारा ही की जाती है।

(1 मिलियन = दस लाख)

॥ इस भारी ढुलाई के अतिरिक्त भी बैलों का भारी योगदान है ॥

संदर्भ - गाय का चिरकालिक सच्चा अर्थशास्त्र - अखिल भारतीय कृषि गौसेवा संघ (1990) वर्धा

"माँ के दूध के बाद गाय का दूध ही सर्वश्रेष्ठ आहार है" वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है। गाय का दूध स्फूर्ति दायक है।

गाय के दूध-दही घी में शरीर के लिये लाभकारी १०० से अधिक तत्वों के अलावा पर्यावरण शुद्धि की अचूक क्षमता भी निहित है।

महर्षि दयानंद ने सम्पूर्ण हिसाब लगाकर सिद्ध किया था कि- एक गाय और उसके वंश के दूध और उत्पादित अन्न से ४,१०,४४० (चार लाख दस हजार-चार सौ चालीस) मनुष्यों को एक बार का भोजन मिल सकता है। जबकि उसके मांस से केवल ८० आदमियों को सिर्फ एक बार तृप्ति मिलेगी।

संदर्भ- गौकरुणानिधि ले. दयानंद सरस्वती जी महाराज

दूध की मात्रा को ही गाय की उत्तमता का मापदण्ड मानने वालों ने नस्ल सुधार के नाम पर वर्णसंकर जर्सी गाय को बढ़ावा दिया। "यूरास" के अंश से गौवंश विकृत कर दिया। जो ना श्रद्धा के योग्य है ना पूजा के। इसके दूध में वैसे तत्व नहीं है. और ना ही इससे उत्पन्न बैल कृषि के काम में आते हैं।
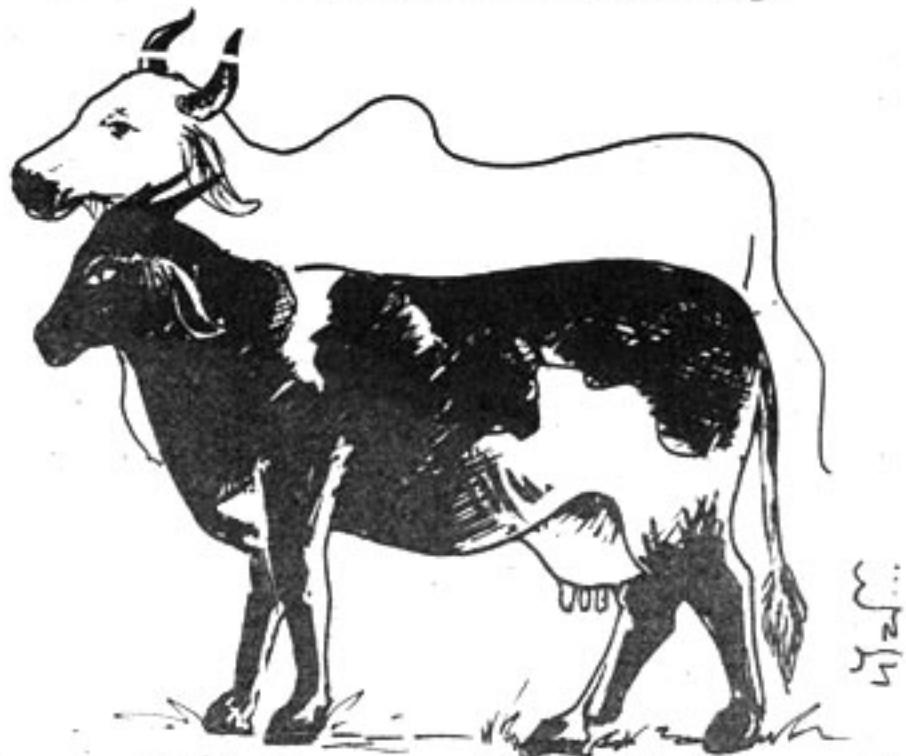
भारतीय गाय विदेशों की तरह दूध और मांस देने वाली पशु नहीं। कृषि प्रधान भारत की रीढ़ है। दूध के मामले में सिद्ध हो चुका है कि देसी गाय जर्सी गाय से अधिक दूध दे सकती है अगर उसे वैसा ही पौष्टिक आहार आदि मिले। इजराइल में भारतीय गायें सर्वाधिक दूध दे रही हैं। गाय के बछड़े की गतिशीलता और भैंस-जर्सी के बछड़े-पाड़ों की सुस्ती से दोनों के दूध का अन्तर समझ सकते हैं।

* ब्रह्मलीन पू. श्री डोंगरे जी महाराज

गाय का गोबर मल नहीं .... मलशोधक है !

भारत की शास्त्रीय मान्यता है कि गाय के गोबर में लक्ष्मी का वास है। दीवाली के दिन गाय की एवं दूसरे दिन गोबर की पूजा गोबर धन (गोवर्धन) भी की जाती है। ईंधन - खाद से भी अधिक घरों की लिपाई हेतु गोबर का महत्व है। पवित्रता का प्रतीक है।

विदेशों में हुऐ वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध भी हो चुका है कि "जिन घरों में गोबर की लिपाई होती है उनमें परमाणु विकिरण या रेडियो धर्मिता का दुष्प्रभाव नहीं होता।

लिपाई के अलावा भी गोबर के अनेक उपयोग है। इसके गैस से उर्जा, खाद एवं जलाने से वातावरण शुद्धि होती है। शेष बची राख भी एक अच्छी उर्वरक व कीटनाशक है। बर्तन सफाई का निरापद पावडर है. पूना एवं बुसद (महाराष्ट्र) में गोबर से एक लेप तैयार किया है जो कि शीतताप रोधी (वातानुकूलित) आवरण का काम करता है।
(महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ कामर्स ने इस आविष्कार को पुरस्कृत भी किया है)

"गोमूत्र" एक कीटनाशक * औषधि

प्रत्येक गोवंश वर्ष में 1·5 टन मूत्र देता है। जिसमें 28 किलो नाइट्रोजन '28 किलो फास्फोरस और 27·30 किलो पोटाश होती है। इसके अतिरिक्त गंधक अमोनिया, मेग्जीन, यूरिया साल्ट, कापर एवं अन्य क्षार भी गोमूत्र में रहते हैं। यदि इन सभी तत्वों का सही उपयोग किया जावे तो देश के सम्पूर्ण गोवंश से प्राप्त मूत्र का मूल्य 80-90 अरब रुपये होता है।

यह गोमूत्र एक निरापद कीटनाशक है। जो हानिकारक कीड़ों का नाश तो करता ही है साथ ही भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बढ़ाता है। सिर्फ कृषि ही नहीं वातावरण शुद्धि के लिये घर में भी गोमूत्र का छिड़काव किया जाता है।

आयुर्वेद एवं नव चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से गोमूत्र एक परमोपयोगी रसायन एवं पूर्ण औषधि है। चरक संहिता, राज निघन्टु, वृहद वाग भट्ट, अमृत सागर, अजायबल्म खलूकात (फारसी ग्रंथ), कलर हीलिंग (वैज्ञानिक सन्दर्भ) आदि ग्रंथों में अनेक असाध्य रोगों की गोमूत्र चिकित्सा का वर्णन किया गया है। विदेशों में भी गोमूत्र चिकित्सा को प्रभावी बनाने के लिये "फोटो थेरेपी" का सहारा लिया जा रहा है। कोढ़, बवासीर, मधुमेह, नपुंसकता गंजापन, चर्मरोग, पुराना कब्ज, रक्तचाप, अनिद्रा नैत्र विकार, सफेद दाग आदि अनेकों रोगों की रामबाण दवा के साथ ही गोमूत्र मस्तिष्क के शक्ति वर्धक जीवनी शक्ति है. अमृततुल्य है।

॥ संजीवनी ॥

दूधारू पशुओं का कत्ल हर दृष्टि से भारी घाटे का सौदा है। उदाहरण के लिये "अलकबीर यांत्रिक कत्लखाना"

पांच वर्ष तक का कुल शुद्ध लाभ
२० करोड़ रुपया
(जिसमें से अधिकतम विदेशी मालिक का)
सिर्फ ३०० लोगों को रोजगार

यदि ये पशु जीवित रहें तो पांच वर्ष में हमें प्राप्त होगा...

- 128 करोड़ रु० दूध, दूधजन्य पदार्थ एवं ऊन से।
- 2253.55 करोड़ रु० 54.45 लाख टन खाद्यान्न उत्पादन में विभिन्न सहयोग - ऊर्जा - खाद द्वारा।
  163.35 लाख टन पशुखाद्य - चारा - खली
- 95.40 करोड़ मृत पशुओं के शरीर से प्राप्त आय।
- 3,48,125 व्यक्तियों को रोजगार।

पशु पालन से दूध पावडर, घी, ऊन, रसोई गैस, डीजल एवं रासायनिक खाद के आयात में खर्च की जा रही अरबों रु० की विदेशी मुद्रा बचाई जा सकती है

"सामना" एवं 'पीपुल्स फार एनीमल में मेनका गाँधी' की लेखमाला एवं, विनियोग परिवार द्वारा प्रकाशित विश्लेषण के आंकड़े से

पीना है तो कोकाकोला-पेप्सी पियो .... विदेशी शराब पियो ..... मिनरल वाटर पियो।
इस पानी में से तुम्हें एक बूंद भी नहीं....

जिस देश में जनता बूंद-बूंद पानी के लिये तड़प रही हो। और पेयजल के लिये नालियों का गंदा पानी या 12 रु. लीटर का मिनरल वाटर मजबूरी में प्रयोग कर रही हो। उस देश में शुद्ध मांस के लिये अरबों-खरबों लीटर पानी (पेयजल) कत्ल खानों को देना राष्ट्रघाती कृत्य नहीं तो और क्या है?

एक पशु पर 500 लीटर पानी सफाई हेतु खर्च होता है। अलकबीर को प्रतिवर्ष 48 करोड़ लीटर पेयजल एवं देवनार को 18 लाख गैलन पेयजल प्रतिदिन दिया जाता है। यह पानी भूमि को दूषित भी कर रहा है।

संदर्भ- हिन्दुस्तान टाइम्स 9 अप्रैल 1994 नई दिल्ली

निरुपयोगी शब्द की आड़ में प्रतिदिन हजारों सकलांग स्वस्थ गौवंश यदि इसी तरह कटता रहा तो.....

सेन्ट्रल लेदर रिसर्च इंस्टीट्यूट के अखिल भारतीय सर्वे की रिपोर्ट भारत के वाणिज्य मंत्रालय द्वारा नवंबर 1987 में प्रकाशित - पेज - 27
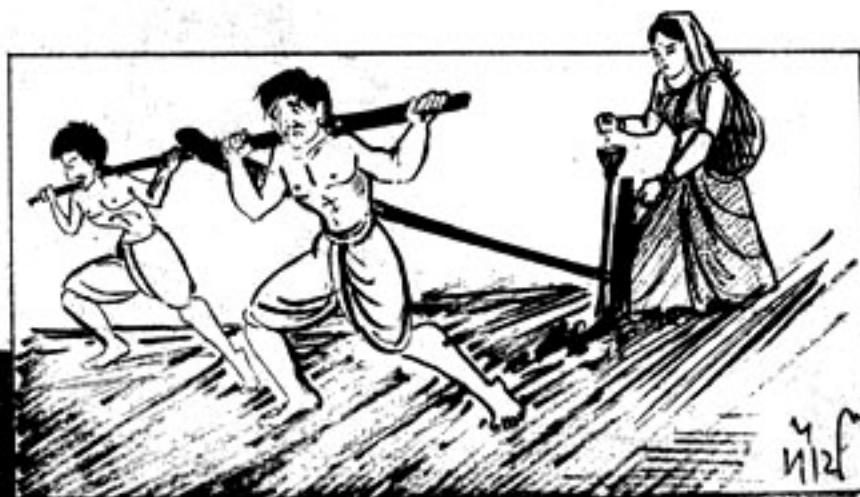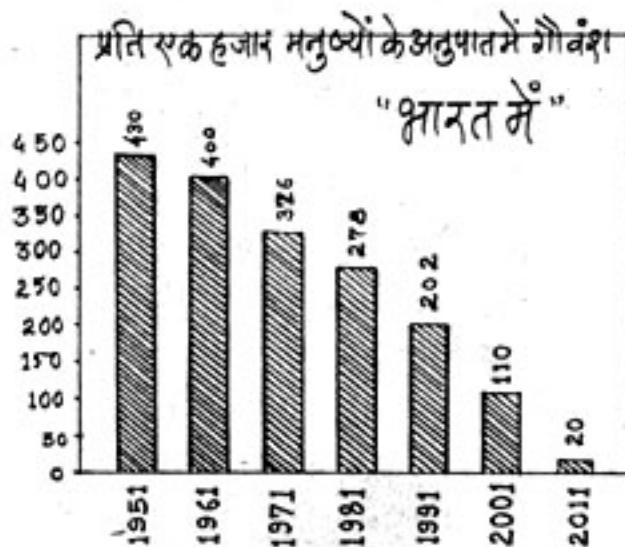
पशुओं के कत्ल से प्राप्त होने वाली वस्तुऐं तो उनकी अपनी प्राकृतिक मौत के बाद देश को प्राप्त होगी ही।

एक और महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि कत्ल से प्राप्त धन चंद पूंजीपतियों की जेब में जायेगा। यांत्रिक कत्ल खानों से प्राप्त पशुचर्म आदि वस्तुऐं "बाटा" जैसी बड़ी-बड़ी विदेशी कम्पनियों के काम में आता है। जबकि स्वाभाविक मौत से मरने वाले पशु की चर्म-सींग-खुर-बाल आदि सामग्री गांव में बसे लाखों लघु-कुटीर उद्योगों का आधार है। वर्ष में ३६५० रु. का चारा खाकर पशु २०,००० रु. की खाद आदि देता है वह अतिरिक्त ही है। आवश्यकता है इस आधार पर नियोजन करने की। टूटा हुआ अर्थतंत्र पुनः खड़ा करने की।

सोने का अंडा देने वाली मुर्गी को मारकर मूर्ख ने क्या पाया ? रोज मिलने वाला एक अण्डा भी गँवाया। (एक शिक्षाप्रद बाल कथा)

मूर्खता नेता कर रहे हैं...परन्तु फल आपको हमें भुगतना होगा.

गौ का आर्थिक महत्व रहते हुए भी उसे सिर्फ आर्थिक दृष्टि से देखना पाप है।

- पू. श्री. हनुमान प्रसाद जी पोद्दार

प्रति एक हजार व्यक्ति के अनुपात में लगातार घट रहा गौवंश

वर्ष	1951	1961	1971	1981	1991	2001	2011
गौवंश	430	400	326	278	202	110	20

प्रस्तुत आंकड़े सरकार के ही पशु कल्याण बोर्ड द्वारा की गई पशुगणना एवं अनुमान पर आधारित रिपोर्ट से लिये गये हैं। यदि यांत्रिक कत्लखाने शुरु होंगे तो सन् २००५ के पूर्व ही गौवंश लुप्त हो जायेगा।

"Slaughtering animals is Slaughtering our Economy"

Published by Animal Welfare Board of India Ministry of Environment & Forest

जंगली पशुओं के लिये अभयारण्य !
पालतू गौवंश के लिये कत्लगाह !!

सरकार शेरों की लुप्त होती प्रजाति को बचाने के लिये करोड़ों रुपये खर्च करके परियोजनायें संचालित कर रही है। दूसरी ओर कुछ विदेशी मुद्रा के लोभ में पालतू पशुओं को कटवाती जा रही है। सरकार की इस दुर्नीति के कारण भारतीय नस्ल की गायों की छः प्रकार की प्रजातियाँ लुप्त हो चुकी हैं। जिनके नाम हैं

• अलमबदी • बिन्झरपुरी • खटियाली •
• पुलिकुलम • बरगुर • राथपुरी •

इतना ही नहीं लाखों टन मेंढक की टांगों और साँपों की खालों का निर्यात करने की कुनीति का दुष्परिणाम रहा कृषि नाशक कीट और चूहे आदि की संख्या बहुत बढ़ गई.... जो सर्प एवं मेंढकों के भोजन थे।
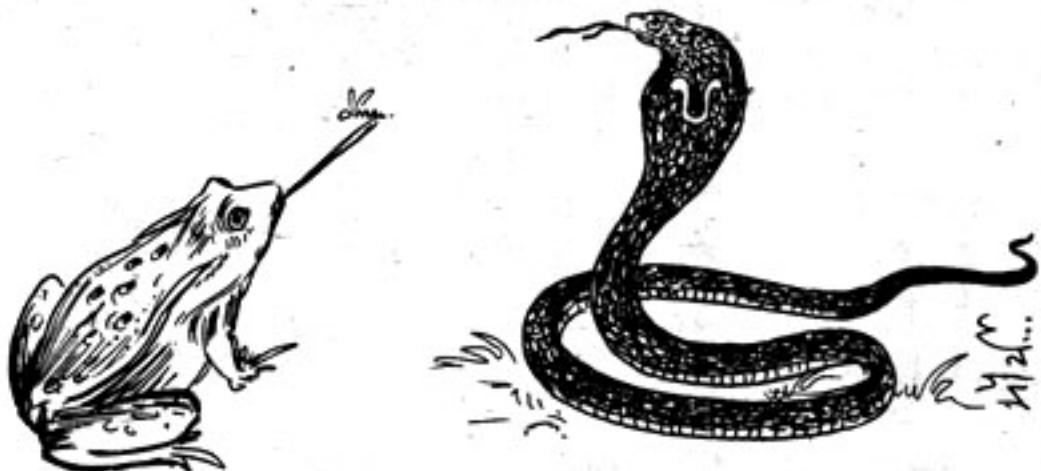
कत्लखानों की समर्थक सरकार तर्क देती है कि "यदि पशुओं को मारा नहीं जायेगा तो पृथ्वी पर मनुष्यों के लिये जगह नहीं बचेगी." सर्वथा झूठ है। प्रकृति अपना संतुलन स्वयं बनाती है। उसमें हस्तक्षेप नहीं होना चाहिये।

जरा सोचिये... गिद्ध, गधे, घोड़े आदि की संख्या क्यों नहीं बढ़ी....?

"गाय" भारत का सुरक्षा छत्र

आणविक संघर्ष के इस भीषण दौर में गोवंश ही एक ऐसा माध्यम है जो भारत की रक्षा कर सकता है। कोई भी देश यदि भारत के ६-५ प्रमुख नगरों पर बम वर्षा कर दे या पुल आदि तोड़कर संचार और परिवहन व्यवस्था को खत्म कर दे तो पूरा देश पंगु बन जायेगा। वैसे भी युद्ध के दौरान अधिकांश साधन सेना के लिये ही सुरक्षित रखे जाते हैं। ऐसी स्थिति में ना तो खेतों को खाद, बिजली, पानी डीजल या बीज आदि मिल पायेंगे और ना अन्न-दूध आदि की आपूर्ति की जा सकेगी। डीजल संकट के समय इसकी झलक दिखती है.

ऐसे घोर संकट में एकमात्र आशा की किरण है... ....गोवंश। जो खाद की चलती फिरती फेक्ट्री है. दूध और औषधि का अक्षय भंडार है. स्वावलंबी (डीजल रहित) ट्रेक्टर है। परमाणु रेडियो धर्मिता की रक्षा का सुरक्षा कवच है। जब तक गाय रूपी यह कवच भारत के पास रहेगा.. तब तक भारत दुर्जेय ही नहीं अजेय रहेगा।

मौर्य...

॥ गोवंश का कोई पूर्ण विकल्प नहीं. ॥

"पशु" मानव द्वारा छोड़े गये निरर्थक पदार्थों को पुनः सार्थक बनाने का प्राकृतिक संयंत्र

• प्रकृति की व्यवस्थानुसार मानव एवं पशु के भोजन में कहीं एक दूसरे के अधिकारों का उल्लंघन नहीं है। फसल का अन्न मनुष्य का भोजन है तो शेष (कड़प - भूसा) आदि पशु का। तेल यदि मानव का आहार है तो शेष खली पशु का। इस प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार पशु मानव पर भार नहीं है। सहयोगी ही है।

अपनी अपरिमित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये मानव दानव बनकर मूक पशुओं के अधिकारों पर अतिक्रमण कर रहा है। खली का निर्यात, भूसे का औद्योगिक उपयोग और पशुओं को स्वयं का खाद्य मानकर कत्ल। नये संकर बीजों के प्रयोग से चारा भी कम उत्पन्न हो रहा है।

100 करोड़ की विशाल आबादी वाला भारत ..... यह कोई कांक्रीट के चंद शहरी जंगलों में नहीं .... प्रमुख रूप से गाँवों में बसा है। ये गांव जिन्दा हैं मूलतः कृषि आधारित धंधों पर। और कृषि आधारित हैं मुख्यतः पशुओं पर .. गौवंश पर। पशुपालन का अर्थ है इस देश को जीवन शक्ति प्रदान करना और इनकी हत्या का अर्थ है देश की अर्थ व्यवस्था की गरदन पर छुरी चलाना।
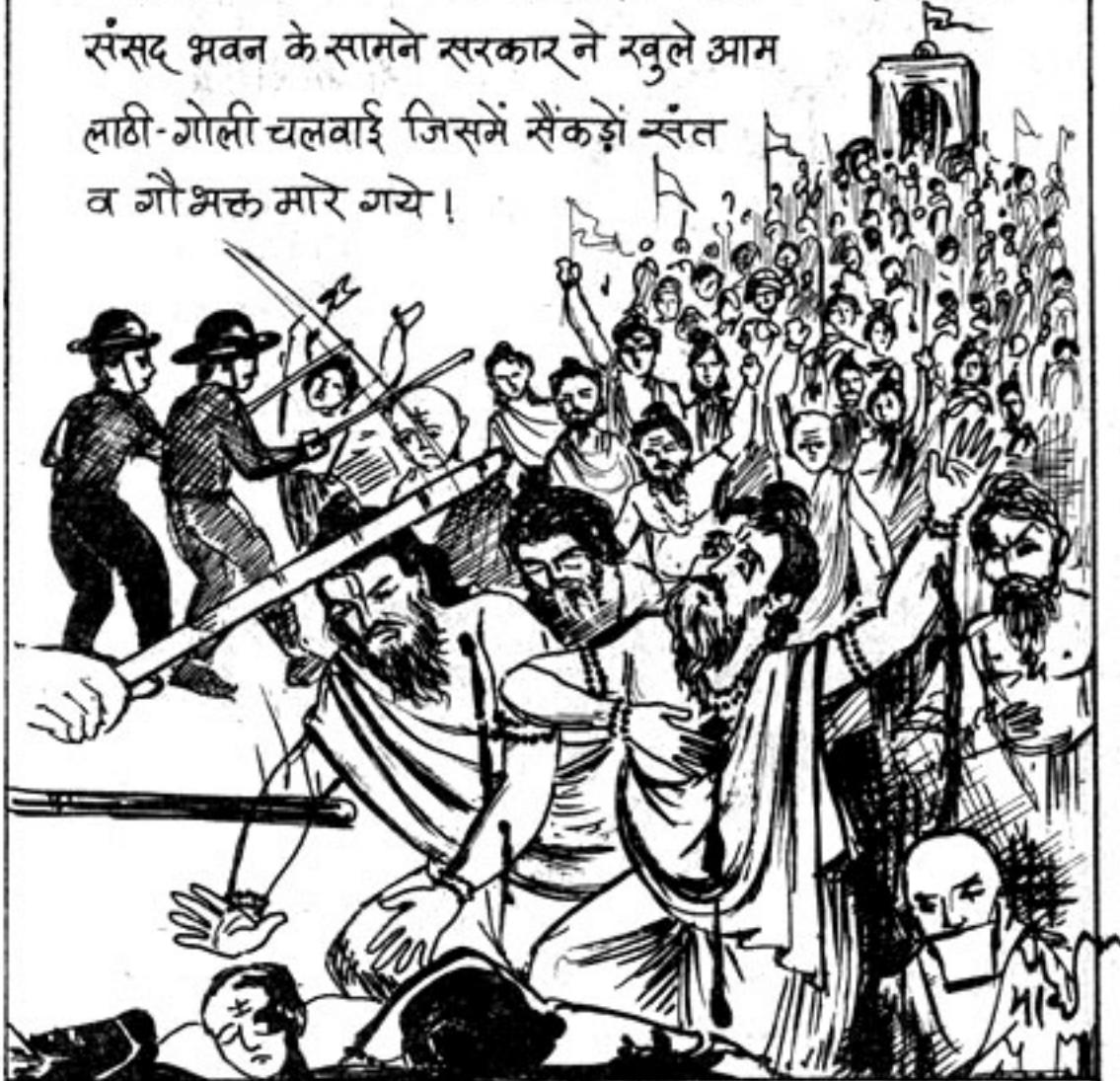
स्मरण रहे! यह जघन्य कांड गोपाष्टमी को इन्दिरा शासन में हुआ था. गोमाता का दिन अष्टमी को होता है। संजय गांधी की दुर्घटना मे मृत्यु अष्टमी को हुई। स्वयं इंदिरागांधी की हत्या गोपाष्टमी को ही हुई। एवं उनके दूसरे पुत्र राजीव गांधी की बमविस्फोट में मृत्यु भी अष्टमी को ही हुई। .... गोहत्या का अनुमोदन - वंश नाश को आमंत्रण ॥

उंकल के पालतू तोते की तरह छद्म बुद्धिजीवी एवं नेता "निरुपयोगी पशु" का हौव्वा खड़ा करके देश में भ्रम पैदा कर रहे हैं। यदि इन पशुओं के गोबर का भी सही उपयोग किया जाये तो उन पर हुये खर्च से कई गुना आय प्राप्त की जा सकती है।*बूढ़े एवं बीमार पशुओं का गोबर खाद के लिये और भी अच्छा होता है।

* भारत सरकार की ही एक पत्रिका 'उन्नत कृषि' मई १९९३ से

प्रसिद्ध गांधीवादी संत विनोबा भावे ने गौरक्षा हेतु अनेक बार सरकार से मांग की। अनशन, उपवास धरनों आदि द्वारा सत्याग्रह किया! बदले में

12 वर्षों से संत विनोबा भावे द्वारा प्रारंभ सत्याग्रह बम्बई के देवनार कत्लखाने के द्वार पर अनवरत चल रहा है। और अन्दर गौवंश की निर्बाध हत्या जारी है।

गोहत्या के जिम्मेदार नेताओं-दलों को वोट देना भी
गोहत्या के पाप में अप्रत्यक्ष रूप से भागीदार होना ही है !

कांग्रेस आई और कसाई। चोर-चोर मौसेरे भाई ॥

अवैध रूप से गाय-बछड़े ले जाते ट्रक पकड़े गए

जहां बूचड़खाना बनना था, वहां गो सदन बने

गोरक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर आंदोलन : विहिप

गोवंश को भर कर ले जा रहे दो ट्रक पकड़े

गोवंश की कुर्बानी रोकने के लिए बजरंग दल मुहिम छेडेग

VIRAT "GOU" RAKSHA SAMMELAN,

Demand for ban on cow slaughter

जैन मुनियों ने आँदोलन के लिए जाप - अनुष्... किए

गौ बध रोकने के लिए बजरंग दल कार्यकर्ता चौकियां बनायेंगे

पश्चिम बंगाल काटने ले जायी जा रही २७ गायें व ८ बछड़े मुक्त

उत्तरी दि... बछड़ों से लदे ...

गोवंश हत्या पर पाबंदी नहीं तो लम्बे संघर्ष की चेतावनी

बकरीद पर गौवध नहीं होने देंगे बजरंगी

गौवध को ले जाते चार ट्रक सहित १२

बजरंगियों ने पथराव कर ट्रकों को क्षतिग्रस्त किया, कई बजरंगी भी चुटैल ट्रकों में सवार लोगों को बुरी तरह पीटा दो ट्रक चालक फायरिंग करते हुए भागने में सफल

लोगों ने काटने जा र... बछड़ों को पकड़

भाजपा एवं बजरंग दल कार्यकर्ताओं की बैठक में प्रशासन को चेतावनी

धर्म परायण जनता की भावनाओं से खिलवाड़ नहीं होने देंगे

१९९६ से सम्पूर्ण देश में पूर्णतः गौहत्या बंदी की खुली घोषणा बजरंग दल द्वारा.

— श्री जय भान सिंह पवैया (राष्ट्रीय अध्यक्ष)

आज भारत भूमि पर गौरक्त की एक बूंद क्या..... नदियाँ बह रही है। इसीलिये बड़े-बड़े धार्मिक अनुष्ठानों का भी कोई प्रत्यक्ष असर दिखाई नहीं देता । अतः प्रथमतः आवश्यक है भारत भूमि से सम्पूर्णतः गौहत्या का त्रास मिटाना ।

— श्री अशोक सिंहल

प्रकाशक

गोवंश हत्या एवं मांस निर्यात निरोध परिषद

अ.भा. यांत्रिक कत्लखाने हटाओ समिति

संकट मोचन आश्रम, रामकृष्ण पुरम से. ६, नई दिल्ली - 110 022